ISSN: 2277-8721

SJIF Impact Factor 6.21

Electronic International Interdisciplinary Research Journal (EIIRJ)

A Peer Reviewed Multidisciplinary Journal

"स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में मानवतावाद"

Volume-VIII Special Issues - II

Savitribai College of Arts Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar
ID. No. PU/AN/A/ 58/1999

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

संपादक
डॉ. मधुकर देशमुख

INDEX

Sr. No	Title Name	Name of the Author	Page No.
1	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य मे मानवतावाद	डॉ अनीता पंडा	1
2	'निराला के प्रगतिशील काव्य में मानवतावाद'	डॉ. अशोक पंकज डॉ. सुनील कुमार	6
3	प्रवासी हिंदी कहानियों में मानवतावाद	अनुपमा तिवारी	15
4	मानव बनाम आदमी : वाद के संदर्भ में	प्रो.दिपेंद्रसिंह जाडेजा	19
5	हिमांशु जोशी का मानवीय दृष्टिकोण	विभा रौन डॉ. सुनील कुमार	23
6	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी महिला नाट्य साहित्य में मानवतावाद	डॉ. दीपा दत्तात्रय कुचेकर	30
7	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी साहित्य में मानवतावाद	प्रा. डॉ. योगेश पाटील	38
8	संजीव के कहानी–संग्रह 'संजीव की कथा–यात्रा' में मानवतावाद	प्रियंका डॉ. सुनील कुमार	43
9	कवि गोपालदास नीरज के काव्य में मानवतावाद	डॉ. मधुकर देशमुख	50
10	धूमिल की जनवादी कविता में अभिव्यक्त जनवादी चेतना	प्रा.डॉ.भरत शेणकर	54
11	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कविता में मानवीयता	डॉ. जालिंदर इंगले	59
12	महाश्वेता देवी कृत उपन्यास 'अग्निगर्भ' में वर्णित खेतमजूर का संघर्ष	डा.अशोक पंकज	62
13	बीमार मानस का गेह' कविता संग्रह में मानवतावाद	प्रा. डॉ.बालाजी विलासराव महाळंकर	66
14	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी काव्य में मानवतावाद	डॉ.अनिता वेताळ–अंत्रे	70
15	हिंदी दलित कविता में मानवतावाद	प्रा. थोरात बबन किसन	73
16	मानवतावाद की खोज 'सेज पर संस्कृत	प्रा. बहिरम देवेंद्र मगनभाई	79
17	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी लघुकथा में मानवतावाद	डॉ. नानासाहेब जावळे	82
18	'झीनी–झीनी–बीनी चदरीया में चित्रित मानवीय संवेदना'	डॉ. सजित खांडेकर	86
19	नागार्जुन के उपन्यास 'उग्रतारा' में मानवतावाद	डॉ.हिरल शादीजा	89
20	मानवता के बदलते रूप (सुमन और सना के विशेष संदर्भ में)	प्रा. राजेश दत्तात्रय झनकर	94
21	ढाई घर उपन्यास में चित्रित मानवतावाद	शितोळे नामदेव ज्ञानदेव	99
22	कोर्ट मार्शल' नाटक में मानवीय मूल्य	डॉ. गोविन्द पांडव	103
23	गिरिराज किशोर के उपन्यासों में मानवतावाद	प्रा. नयना मोहन कडाळे	106

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

ढाई घर उपन्यास में चित्रित मानवतावाद

शितोळे नामदेव ज्ञानदेव,
अध्यक्ष हिंदी विभाग सावित्रीबाई कला महाविद्यालय,पिंपळगाव पिसा, तह.–श्रीगोंदा,जिला–अहमदनगर

संसार में ईश्वर का श्रेष्ठ अगर कोई है तो वह मानव है क्योंकि उसके पास बुध्दि है, वाण है और विवेक है, और इसके सही उपयोग से ही मनुष्य बनता है। मानव जाति के कल्याण के लि मानवीय

क्षमता के अतिरिक्त विवेक की आवश्यकता है। लेकिन मनुष्य इसी विशेष गुण को भुलता जा रह है । इसी कारण आज मनुष्य संघर्षबहुल जीवन जी रहा है।

वर्तमान युग की सामाजिक, आर्थिक तथा राजनितीक विषमताओं ने मनुष्य पर बोझ डाल दिया है। जिसके कारण उसकी सहज उदात्त प्रवृत्तियाँ कुण्ठीत हो गयी है और जीवन में अवरोध उत्पन्न हो रहा है । मनुष्य की जीवन के प्रति जो आस्था है वह नष्ट होती जा रही है। भौतिक सुख सुविधाओं के मनुष्य को परिपूर्ण बना दिया है, पर साथ ही इस बौध्दिकतानें उसे कटू, भावना शुन्य और असंवेदनशील भी बना दिया है। बाहरी रूप से दिखाई देने वाले सुख–साधन उसे भीतर से सुखी, शांतीपूर्ण स्थिति नहीं दे रहें है। मानव–हृदय में इन तत्वों को पाने की छटपटाहट से ह मानवतावादी दर्शन का विचार–चिंतन प्रकट हुआ होगा। मानव जीवन में आस्थापूर्ण सद्प्रवृत्तियों क महत्ता प्रस्थापित हो सके और उसके अपने व्यावहारीक जीवन में एक सौहार्दपूर्ण परिवेश मिल सके ऐसा परिवेश जिनमें व्यक्ति अपनी उदात्त प्रवृत्तियों को प्रतिष्ठित कर सके और सम्मान तथ सौहार्दपूर्ण जीवन जीने की दिशा में आगे बढ सके। संसार में मानवतावादी चिंतन प्रस्तुत करने क यही सबसे बड़ा उद्देश होना चाहिए ।

मानवतावाद: अर्थ और परिभाषा

किसी भी वाद की जब स्थापना की जाती है तब विवाद तो होता है । इसमें भ 'मानवतावाद' शब्द है क्योंकि यह शब्द समुची मानवजाति की बात करता है। मानवतावाद पर विचा प्रस्तुत करने से पहले मानव–मानववाद–मानवतावाद को कमबध्द रूप से समझने का प्रयत्न अनेक विद्वानों ने किया है।

मानवतावाद शब्द अंग्रेजी के हयुमेनिज्म (Hymanism) का हिंदी पर्याय है। इस शब्द क उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द 'हयुमन्स' (Human) शब्द का रूप ग्रहण किया तथा जिसका संबध होमो (Homo) मनुष्य जाति से है। हयुमन शब्द का अर्थ 'मानव' है, इसे प्रत्यय लगाकर मानवतावाद बनाया है। व्यक्ती को अपना प्रतिपाद्य बनाकर विश्व कल्याण और जीव–मात्र की हित की बात 'मानवतावाद' के अंतर्गत की जाती है।

ID. No. PU/AN/N 58/1999
PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

मानवतावाद का उद्‌भव एक विशिष्ठ विचारधारात्मक आंदोलन के रूप में पुनःजागरण काल १५/१६ वी (शताब्दी) में हुआ। इस काल में मानवतावाद 'समतावाद' और 'मध्ययुगीन' धार्मिक विचारों का विरोध करके एक नयी प्रगतशील भौतिकवादी विचारधारा का समर्थन करते थे। मानवतावादी चेतना के फलस्वरूप मानव–मानव में समता का भाव जाग उठा। जिसमें देश, धर्म, वर्ण, जाति के आधार पर मनुष्य–मनुष्य में जो भेद की रेखा खींची थी उसे मिटाने की कोशिश पहली बार शुरू हुई।

मानवतावादी चेतना को कुछ विद्वानों नें परिभाषित करने का प्रयास किया है इनसाईक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटानिका में लिखा है '' मानवतावाद विचार अथवा किया की वह सामान्य प्रध्दति है जो अलौकिक अथवा गुणात्मक दर्शन की अपेक्षा पूर्णत मानव कल्याण में अभिरूचि लेती है।'' [१]

प्रसिध्द अमरिकन दार्शनिक प्रो. कारलिस लेमोट के अनुसार– ''मानवतावाद का दर्शन एक ऐसी जीवन पध्दति है, जो मानव जीवन की सृजनात्मक शक्तियोंको मुक्त करती है । तथा उनका संसार के विभिन्न लोगों में एक पारम्पारिक सौहार्द भाव को बनाए रखती है। यह मानववाद इस संसार में तर्क और प्रजातंत्र की पध्दति से समस्त मानवता के अधिकतम कल्याण के लिए भाव–युक्त उल्लास–पूर्ण सेवा का दर्शन है।'' [२]

प्रोफेसर एडवर्ड पीटरचेने के अनुसार सोलहवी सदी के पश्चात मानववाद से अभिप्राय उस दर्शन से रहा है जिसका केंद्र और प्रमाण दोनो मनुष्य है।'' [३]

पंडित जवाहरलाल नेहरू मानवतावाद के संदर्भ में लिखते है–''इस जमानें का दिमाग ऊंचे दर्जे का दिमाग व्यावहारिक है और प्रैगमैटिक है, नैतिक है और सामाजिक है, परोपकारी है और मानवतावादी है. उसका संचालन सामाजिक उन्नती के अमली आदर्शवाद से होता है, उसके पीछे काम करनेवाले आदर्श जमाने की रविश को युगधर्म की नुमांइदगी करते है। पुराने लोगों के दार्शनिक ढ़ंगो को, उनकी अंतिम सत्य की खोज को बहुत हद तक छोड दिया गया है। साथ ही मध्ययुग का भक्तिवाद और रहस्यवाद भी छोड दिया गया है–उसका इश्वर है मानवता और उसका धर्म समाजसेवा।'' [४]

मानव गरिमा के प्रति अविचलित आस्था मानववादी विधारणा का केंद्रबिंदु है । अगर व्यापक दृष्टी से देखा जाये तो जब भी कोई विचारक मनुष्य के पार्थिव को सर्वोपरी मानता है तो उसके चिंतन का संचरण संभवत: मानवतावादी धरातलपर होता है। मानवतावाद एक सम्प्रदाय नही है, वह दृष्टि और कर्म को प्रेरित करने वाली एक व्यापक विचारधारा है। मानवकल्याण की पूर्णता के लिए डॉ. राधा कृष्ण सच्चे मानववाद का अंकन इन शब्दो में करते है '' सच्चा मानववाद हमे बताता है कि हमें मनुष्य में साधारण अवस्था में जो कुछ प्रत्यक्ष दिखाई देता है उससे भी कुछ अधिक श्रेष्ठ तत्व उसमें है जो उसके विचार तथा आदर्श का निर्माण करता है। उसमें एक श्रेष्ठ आत्मा का निवास है। उसे जो भौतिक वस्तुओं, जिनसे उनकी संतुष्टि नही होती, विमुख करता है। वास्तव में मानव कल्याण और सार्वभौमिक कल्याण के लिए आध्यात्मिक एकता की उपेक्षा और धार्मिक अनुभूतीको

ID. No. PU/AN/A/ 56/1999
PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

स्विकार करना दार्शनिक दृष्टी से अनुचित है। नैतिक विचार से असुरक्षित तथा सामाजिक दृष्टी से भयंकर है। जहाँ ईश्वरीय भावना है वहाँ एकता और समता है।'' [५]

गिरीराज किशोर की मानवतावादी दृष्टि

मानवतावादी चेतना का भारतीय पटल पर फिर से आगमन का कारण गांधीवादी विचार दर्शन का प्रभाव है । सत्य और अहिंसा के महान समर्थक विश्व की एकता में विश्वास रखनेवाले गांधीजीने सर्वोदयवाद की स्थापना की जो मानवतावादी प्रवृत्ती का ही निचोड है।

गिरीराज किशोर स्वयंम सामंती परिवार में पैदा हुए थे लेकिन उन्होंने उस परंपरा का विरोध किया 'ढाई घर' उपन्यास के रघुवर के माध्यम से वे अपने विचार प्रकट करते है, रघुवर सामंती व्यवस्था का विरोध करता है और अपने कष्ट से कमाऍं हुए धन पर ही अपना अधिकार जताना चाहता है।

बड़े राय ने एक दिन नवाब साहब को दावत दी थी इस दावत में शहर के नामी लोग मौजूद थे दावत में साफ–सफाई का काम एक भिश्ती कर रहा था। नवाब साहब जब खाने के लिए बैठे तो वह गमलों में पाणी छिडक रहा था अचानक नवाब साहब की नजर उस भिश्ती पर गयी उन्होंने अपने ए.डी.सी के द्वारा उसे बुलवाया और कहा ''बैठो खाना खाओ यह हमारे दिल में नहीं की एक भाई खाना खाये, दुसरा भूखा काम करता रहे।'' [६] इस घटना को देखकर बडे राय का चेहरा तमतमाया लेकिन नवाब साहब के सामने कुछ भी नहीं कर सके उल्टा वे उसके पास गए और बोले '' घबराओ नही, आराम से खाओं। यह सब तुम्हारे लिए ही है नवाब साहब और उनका मेहमान के लिए एक ही रूतबा रखते है ऐसे मौके तुम्हारी जिंदगी में फिर नहीं आयेंगे आज तुम्हे हम खुद परसेंगे।'' [७]

बडे राय के इस प्रकार के व्यवहार को देखकर भिश्ती घबरा गया उसको तो समझ में नहीं आ रहा था क्या हो रहा है बडे राय जब उसे परोसने लगे तो भिश्ती खडा हुआ और कहने लगा ''नही हुजूर मुझे दोराहें में न डाले, मै तो आपकी झुठन पर पलने वाला हूँ मेरा सारा खानदान आपकी झूठन पर पला है।'' [८] इस दावत ने तो बडे राय को बैचेन कर दिया था। क्योंकि जिस भिश्ती को नवाब साहब ने अपने पास बिठाया था उसके शरीर से बू आ रही थी एक छोटे और हकीर इन्सान को शहर के इतने बडे–बड़े लोगों के साथ बिठाया इससे बड़ें राय को गुस्सा तो बहुत आया लेकिन हुकूमत के सामने कुछ भी नही कर पाये थे। जिन लोगों को बड़े राय ने मजदूर होकर अपनें हाथों से खाना परोसा था। यह सामंती प्रथा से नितांत विरोधी था लेकिन लेखक ने बडी चतुराई से इस घटना का चित्रण कर के यह साबित करने का प्रयास किया है कि समय बदल रहा है अत: समय के साथ समाज में भी परिवर्तन हो रहा है इस परिवर्तन को समाज में होनेवाले प्रत्येक घटक को स्वीकार करना ही होगा चाहे वह सामंत हो, साहुकार हो या जमींदार इन सभी को अपने में परिवर्तन लाना ही होगा आगे आने वाले दिनों में वे लोग अपनी सामंती या जमींदारी प्रथा का ढिंढोरा पिटकर अपना जीवन सुख और चैन से नही जी सकते उन्हे सामान्य रूप से जीना ही होगा।

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

जब रिआया और काश्तकार लोग अपने ऊपर अन्याय को लेकर बड़े राय के पास जाते है और उन्हे न्याय माँगते है तब बड़े राय के पास कृष्णराय को समझाते हुए कहते है '' वे लोग हमारी रिआया है उनकी दुःख, तकलीफ को समझना हमारा फर्ज है।'' [९] हरि राय सामंत होते हुए भी समझदार है कृष्णराय को समझाते है कि उनकी जमीन वापस दे दो।

प्रस्तुत उपन्यास अंतिमतः मानवतावादी मूल्यों का संस्कार पाठक के मन में संक्रमित करता है प्रदान करता है यह इस उपन्यास की विशेषता है इस कलाकृति को पढ़कर जमींदार हरिराय के सामंती पुरूष अहं का कोई पाठक समर्थन नही कर सकता । भ्रष्टाचारी कृष्णराय की पत्नी स्त्री–सुलभ वास्तविकता को सुरक्षित रखते हुए गैर मर्द से विवाह के बंधन से मुक्त होकर मातृत्व का स्वीकार करती है इस घटना से कोई भी विवेकवादी स्त्री–पुरूष पाठक विचलित नहीं हो सकता इस उपन्यास में मजहबी दिवार तोड़कर एक नोकर रहमतुल्ला इस्लामी मौलवीयों की सम्मती न लेते हुए हिंदु तवायफ से शादी करता है और इन दोनों का संसार आखिर तक खुशहाली में बीतता है इस उदाहरण में धर्म, जाति के बंधन झूठे है यह साबित होता है। उनसे प्रभावित परंपराएँ सुख के बजाएँ दुख ही देते है आदर्श विवाह और सहजीवन धर्म जाति के बंधनों से परे होते है यह नयी सूझ–बूझ और मानवता का नया मूल्य इस उपन्यास का सुझाव है ।

संदर्भ:

१. डॉ. राधाकृष्णन का मानवतावाद–अनिलकुमार वर्मा पृष्ठ–१४

२. वही पृष्ठ–१५

३. वही पृष्ठ–१

४. मानवतावाद और साहित्य–नवलकिशोर–पृष्ठ १६.

५. हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली–डॉ.अमरनाथ पृष्ठ–९९

६. ढाई घर–गिरिराज किशोर–पृष्ठ–१३२

७. वही पृष्ठ–१३२

८. वही पृष्ठ–१३२

९. वही पृष्ठ–१४०

Savitribai College of Arts
ID. No. PU/AN/A/ 58/1999
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar

PRINCIPAL
Savitribai College of Arts
Pimpalgaon Pisa, Tal. Shrigonda, Dist. Ahmednagar